

अथ नवमस्तोत्रम्

अतिमत तमोगिरिसमिति विभेदन पितामहभूतिद गुणगणनिलय ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १ ॥

विधिभवमुख सुरसतत सुवन्दित रमा मनोवल्लभ भव मम शरणम्  
।

शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ २ ॥

अगणितगुणगण मयशरीर हे विगतगुणेतर भवमम शरणम् ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ३ ॥

अपरिमित सुखनिधिविमलसुदेह हे विगतसुखेतर भव मम शरणम् ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ४ ॥

प्रचलितलयजलविहरण शाश्वतसुखमयमीन हे भव मम शरणम् ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ५ ॥

सुरदितिज सुबलविलुलितमन्दरधरपर (वर) कूर्म हे भव मम शरणम्  
।

शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ६ ॥

सगिरिवरधरातलवह सुसूकर परमविबोध हे भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ७ ॥

अतिबलदितिसुतहृदयविभेदन जयनइहरे.अमल भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ८ ॥

बलिमुखदितिसुतविजयविनाशन जगदवनाजित भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ९ ॥

अविजितकुनइपतिसमितिविखण्डन रमावर वीरप भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १० ॥

खरतरनिशिचरदहन परामइत रघुवर मानद भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ ११ ॥

सललिततनुवर वरद महाबल यदुवर पार्थप भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १२ ॥

दितिसुतविमोहन विमलविबोधन परगुणबुद्ध हे भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १३ ॥

कलिमलहुतवह सुभगमहोत्सव शरणद कल्कीश हे भव मम शरणम  
।

शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १४ ॥

अखिलजनविलय परसुख कारण परपुरुषोत्तम भव मम शरणम ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १५ ॥

इति तवनुतिवरसततरतेर्भव सुशरणमुरु सुखतीर्थ मुनेर्भगवन ।  
शुभतमकथाशय परमसदोदित जगदेककारण राम रमारमण ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्य विरचितं  
द्वादशस्तोत्रेषु नवमस्तोत्रं सम्पूर्णं ॥